बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय नौ

अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण : अच्छा इरादा होना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-सूची

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. प्रेरणाओं का महत्व (3:23) 4

A. अवधारणा (3:56) 4
1. जटिल (5:50) 4
2. सामान्य एवं विशिष्ट (6:47) 5
3. ज्ञात एवं अज्ञात (7:33) 5

B. अनिवार्यता (8:22) 5
1. हृदय (9:27) 5
2. कपट (13:30) 6
3. सद्गुण (17:37) 6

III. विश्वास की प्रेरणा (22:00) 8

A. उद्धार देने वाला विश्वास (22:52) 8
1. आरम्भिक उद्धार का माध्यम (23:55) 8
2. सतत् समर्पण (26:35) 9

B. मन-फिराव (37:32) 11

C. आशा (46:37) 12

IV. प्रेम की प्रेरणा (53:31) 13

A. निष्ठा (56:49) 14
1. वफादारी (57:07) 14
2. केन्द्रीकरण (1:04:07) 16
3. उत्तरदायित्व (1:08:05) 17

B. कार्य (1:11:50) 17
1. प्रायश्चित-रुपी अनुग्रह (1:12:02) 17
2. सामान्य अनुग्रह (1:16:47) 18

C. अनुराग (1:24:10) 20
1. कृतज्ञता (1:26:40) 20
2. भय (1:31:24) 21

V. उपसंहार (1:38:37) 22

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 23

उपयोग के प्रश्न 27

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

II. प्रेरणाओं का महत्व (3:23)

A. अवधारणा (3:56)

हम प्रेरणाओं के बारे में सामान्यतः दो मूलभूत तरीकों से बात करते हैं :

- वह उद्देश्य जिसके लिए हम कुछ करते हैं
- किसी कार्य का कारण

प्रेरणा : एक आन्तरिक प्रवृत्ति है जो हम से कुछ करवाती है।

1. जटिल (5:50)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सामान्य एवं विशिष्ट (6:47)

3. ज्ञात एवं अज्ञात (7:33)

B. अनिवार्यता (8:22)

मसीही अक्सर यह सोचने की गलती कर बैठते हैं कि परमेश्वर हम से सही प्रेरणाओं और इच्छाओं को रखने की माँग नहीं करता।

1. हृदय (9:27)

हृदय : हमारे आन्तरिक व्यक्ति की गहराई और हमारी प्रेरणाओं के केन्द्र; हमारी आंतरिक बातों का निचोड़।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. कपट (13:30)

कपट : नैतिकता का झूठा दिखावा

कपट के विरूद्ध बाइबल की शिक्षा यह संकेत देती है कि अच्छे व्यवहार हमेशा अच्छी प्रेरणाओं से प्रवाहित होने चाहिए।

मसीहियों में भी ऐसी प्रेरणाएं हो सकती हैं जो उनके बाहरी व्यवहारों से मेल नहीं खाती हैं।

3. सद्‌गुण (17:37)

सद्‌गुण : एक प्रशंसनीय नैतिक चरित्र

सद्‌गुण (बहुवचन) : प्रशंसनीय नैतिक चरित्र के विभिन्न पहलू

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब सद्गुण आन्तरिक प्रवृत्ति हों जो हम से नैतिक कार्य करवाएं तो इस अर्थ में सद्गुण प्रेरणाएं हैं।

जब प्रेम और विश्वास के सद्गुण हमारे अन्दर नहीं हैं और जब तक ये सद्गुण हमारे व्यवहार को प्रेरित नहीं करते हैं, तब तक हम जो कुछ करते हैं उसे अच्छा नहीं माना जा सकता है।

यदि हमारे कार्य हमारे दिलों के प्रेम से प्रवाहित नहीं होते हैं तो परमेश्वर उन्हें अच्छा नहीं मानता।

विश्वास के गुण से हमें विश्वासयोग्य तरीकों से कार्य करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। केवल तभी परमेश्वर हमारे व्यवहार से प्रसन्न होगा।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. विश्वास की प्रेरणा (22:00)

विश्वास पुराने और नये दोनों नियमों का मुख्य विचार है।

A. उद्धार देने वाला विश्वास (22:52)

विश्वास : सुसमाचार के सत्य से सहमति और हमारे पाप से बचाने के लिए मसीह पर भरोसा।

1. आरम्भिक उद्धार का माध्यम (23:55)

विश्वास वह औजार है जिसका प्रयोग परमेश्वर हम पर उद्धार को लागू करने के लिए करता है।

उद्धार देने वाला विश्वास हमें हमारे पाप से मन फिराने और हमारे उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा रखने की प्रेरणा देता है। ये अच्छे कार्य हमारे उद्धार के पहले प्रमाण हैं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सतत् समर्पण (26:35)

सतत् समर्पण के रूप में, उद्धार देने वाले विश्वास में सुसमाचार के सत्य के प्रति निरन्तर सहमति और हमें हमारे पाप से बचाने के लिए निरन्तर मसीह पर भरोसा शामिल है।

उद्धार देने वाले विश्वास में हमारे हृदय भी शामिल हैं। यह एक आन्तरिक प्रवृत्ति है जिसके कारण हम इस प्रकार से सोचते, बोलते और कार्य करते हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो।

विश्वास के द्वारा उद्धार पाने का अब्राहम का नमूना मसीह में प्रत्येक विश्वासी के लिए है।

प्रत्येक विश्वासी के लिए आवश्यक है कि वह अब्राहम के समान अपने उद्धार देने वाले विश्वास को बनाए रखे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यदि हमारा विश्वास हमारे अन्दर नहीं रहता है तो वह कभी भी उद्धार देने वाला सच्चा विश्वास नहीं था।

उद्धार देने वाला सच्चा विश्वास हमें अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है। यदि हम अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं होते तो हमारा विश्वास नकली है

इब्रानियों 11 : "विश्वास का समुदाय"

- हाबिल
- नूह
- अब्राहम
- मूसा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. मन-फिराव (37:32)

मन-फिराव हृदय से महसूस किया जाने वाला विश्वास का पहलू है जिसके द्वारा हम सच्चाई से अपने पाप को अस्वीकार करते हैं और उससे फिरते हैं।

विश्वास मसीह की ओर मुड़ना है और मन-फिराव पाप से फिरना है। और ये दोनों मोड़ एक ही गति में हैं।

- अन्यजाति

- यूहन्ना बपतिस्मादाता

- पौलुस

- दाऊद

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम प्रतिदिन पाप में गिरते हैं। और इसका मतलब यह है कि हम पर प्रतिदिन मन फिराने का उत्तरदायित्व एवं अवसर दोनों हैं।

C. आशा (46:37)

आशा वह विश्वास है जो मसीह में हमारे उद्धार के भावी पहलुओं की ओर निर्देशित होता है।

- पुराना नियम — परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के भावी उद्धार की आशा रखी।

- नया नियम — उद्धार के भावी पहलुओं में निश्चय मसीहियत की महान आशा है।

    - यीशु संसार को नया बनाने और उसमें हमारी मीरास देने के लिए निश्चित रूप से वापस आएगा।

    - हमारा भावी उद्धार उन वायदों पर आधारित है जिन्हें अब्राहम को दिया गया था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आशा हमें पाप का विरोध करने का कारण देने के द्वारा अच्छे कार्यों के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करती है।

जब हमारी आशा दृढ़ होती है तो हम प्रेरणा प्राप्त करते हैं :

- जीवन की बड़ी से बड़ी चुनौतियों को सहने में
- हर एक बाधा को जीतने में
- क्योंकि हमारी आँखें परमेश्वर पर लगी हैं जिसने हमें सुरक्षित रखने का वायदा किया है

IV. प्रेम की प्रेरणा (53:31)

यीशु ने पुराने नियम की शिक्षाओं को इस प्रकार संक्षेप में बताया था :

- व्यवस्था की सबसे बड़ी आज्ञा कहती है कि हमें परमेश्वर से प्रेम करना है।
- दूसरी महानतम आज्ञा हम से हमारे पड़ोसियों से प्रेम करने की माँग करती है।
- ये दोनों उन सामान्य सिद्धान्तों को व्यक्त करती हैं जिन्हें अन्य सारी आज्ञाएँ समझाती और लागू करती हैं।

यदि प्रेम हमारी प्रेरणाओं में नहीं है, तो हमारे कार्यों को कभी अच्छा नहीं माना जा सकता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रेम में निष्ठा, कार्य एवं अनुराग शामिल है।

A. निष्ठा (56:49)

1. वफादारी (57:07)

वफादारी प्रेम के विचार का नींव का पत्थर है।

लोगों का सबसे आधारभूत उत्तरदायित्व राजा के प्रति वफादार रहना है।

सुजरेन का प्रेम मुख्यतः अपने लोगों के प्रति वाचा की वफादारी के रूप में व्यक्त किया जाता था :

- सुरक्षा
- न्याय
- आवश्यकताओं की पूर्ति

राजा के प्रति वासल का प्रेम :

- नियमों को मानना
- सहायता
- आदर

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्राचीन मध्य-पूर्व में वाचा के साम्राज्य सुजरेन और उसके अधीनस्थों के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए बहुत से रूपकों का प्रयोग करते थे :

- पिता और बच्चों के रूप में

- पति और पत्नी के रूप में

इन राजनैतिक संबंधों को परिवार के अर्थों में समझने से लोगों को यह देखने में सहायता मिलती थी कि यह प्रेमपूर्ण निष्ठा और वफादारी दिल से होनी चाहिए थी।

परमेश्वर का पितृत्व केवल एक रूपक है। इस रूपक के पीछे यह तथ्य है कि परमेश्वर हमारा राजा है।

यीशु हमारा प्रभु और राजा है, और हमें उससे प्रेम करना है :

- वफादारीपूर्ण आज्ञापालन के द्वारा

- उसकी कलीसिया के प्रति वफादारी के द्वारा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. केन्द्रीकरण (1:04:07)

परमेश्वर और उसका राज्य :

- हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हो
- हमारी इच्छाओं का मूल हो
- हमारे दृष्टिकोण का केन्द्र हो

हम जो कुछ सोचते, कहते और करते हैं उन सब में हमारे अन्दर परमेश्वर और उसके लोगों के लाभ के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

यीशु ने अपने जीवन को परमेश्वर और उन लोगों पर केन्द्रित किया जिन्हें बचाने के लिए वह आया था।

जब हम अपने जीवनों को परमेश्वर और उसके लोगों पर केन्द्रित करते हैं तो :

- हम परमेश्वर के राज्य के घोषणापत्र का पालन करते हैं
- हम इस प्रकार से जीने के लिए प्रेरित होते हैं जिससे वह प्रसन्न हो

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. उत्तरदायित्व (1:08:05)

परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा से हमें परमेश्वर के प्रति उत्तरदायित्व के अतिरिक्त तरीकों को खोजने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

दस आज्ञाएँ — बाइबल इन आज्ञाओं को नियमित रूप से हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र पर लागू करती है।

जब हम यह समझ लेते हैं कि हम अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसके प्रति जवाबदेह हैं, तो हम उसके द्वारा स्वीकृत निर्णय लेने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं।

B. कार्य (1:11:50)

1. प्रायश्चित-रुपी अनुग्रह (1:12:02)

परमेश्वर के कार्य हमेशा उसके चरित्र के अनुसार होते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र सामान्यतः हमें हमारे चरित्र और कार्यों दोनों को परमेश्वर के अनुरूप बनाने का उपदेश देता है।

पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि हमें उस प्रेम के अनुकरण में एक-दूसरे से प्रेम रखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए दिखाया है।

पवित्रशास्त्र हमें दूसरों के प्रति उसी प्रकार का प्रेम दिखाने के लिए कहता है जैसा परमेश्वर ने प्रायश्चित में हमारे प्रति दिखाया है।

2. सामान्य अनुग्रह (1:16:47)

सामान्य अनुग्रह : उन लोगों के प्रति परमेश्वर की दया जो कभी उद्धार नहीं पाएँगे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं इसलिए हमें उन लोगों से भी प्रेम करना चाहिए जिनसे वह प्रेम करता है।

हमारे शत्रुओं के लिए हमारे अन्दर इस प्रकार के प्रेम का न होना आसान है :

- हम उनकी आवश्यकताओं को अनदेखा कर देते हैं।
- हम उनके विरूद्ध बदला लेते हैं।
- उनके अन्याय से पीड़ित होने पर हम आनन्दित होते हैं।
- ये परमेश्वर के चरित्र की विशेषताएँ नहीं हैं।

हमें हमारे शत्रुओं की भलाई की सच्ची परवाह होनी चाहिए :

- उनके प्रति दयालु होना
- उनके लिए प्रार्थना करना
- उनकी सुरक्षा करना
- आवश्यकता के समय उनकी सहायता करना

प्रेम न्याय की इच्छा को रोकता नहीं है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का प्रेम जटिल है। इसमें न्याय की इच्छा और दुष्टता से घृणा दोनों शामिल हैं।

C. अनुराग (1:24:10)

मसीही शिक्षक कई बार बाइबल के प्रेम के बारे इस प्रकार बात करते हैं जैसे कि वह पूरी तरह से कार्यों और विचारों से बना है। बाइबल इस विषय पर हमें एक अत्यधिक भिन्न दृष्टिकोण देती है।

अच्छे कार्य नैतिक रूप से तब अच्छे होते हैं जब वे अनुराग से प्रेरित हों। परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो वे बेकार हैं।

1. कृतज्ञता (1:26:40)

पवित्रशास्त्र में, कृतज्ञता :

- परमेश्वर के अनुग्रह और भलाई के प्रति हमारा सामान्य प्रत्युत्तर होना चाहिए
- इससे हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की प्रेरणा मिलनी चाहिए

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर की भलाई हमारे प्रेम और आज्ञापालन के योग्य है।

हमारे द्वारा किए जाने वाले अच्छे कार्य परमेश्वर को प्रतिदान या प्रतिभुगतान करने का तरीका नहीं हैं। वे केवल उन लोगों के प्रेम से भरे प्रत्युत्तर हैं जो परमेश्वर के कार्य की सराहना करते हैं।

2. भय (1:31:24)

एक विश्वासी के जीवन में “भय” :

- का आतंक और डर से कोई संबंध नहीं
- भक्ति और आदर से भरा होता है

भय मानना पूरे दिल, वफादारी, एवं सक्रियता से परमेश्वर एवं उसकी आज्ञाओं को मानना है।

परमेश्वर का भय : परमेश्वर के लिए भक्ति और आदर जो परमेश्वर के लिए प्रशंसा, प्रेम और आराधना को उत्पन्न करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का भक्तिमय भय निरन्तर उसकी उपस्थिति में रहने के अर्थ में है। यह इस बात को समझना है कि परमेश्वर कौन और क्या है, और वह हम से क्या माँग करता है।

भक्तिमय भय प्रेम का एक आयाम है क्योंकि यह परमेश्वर की शान और भलाई के प्रति पुष्टि एवं सराहना करने का प्रत्युत्तर है।.

भक्तिमय भय हमारी इस इच्छा से हमें अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करता है कि हम उसे आदर और महिमा दें जिसे हम प्रेम करते हैं।

V. उपसंहार (1:38:37)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. प्रेरणाओं की मूल धारणा और इसकी कुछ जटिलताओं को स्पष्ट कीजिए।

2. अच्छी प्रेरणाएं क्यों आवश्यक हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. उद्धार देने वाला विश्वास किस प्रकार प्रेरणा के रूप में कार्य करता है?

4. विश्वास की प्राथमिक अभिव्यक्ति के रूप में पश्चाताप पर चर्चा कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. भविष्य की ओर निर्देशित विश्वास के रूप में आशा का वर्णन कीजिए।

6. वफादारी, केन्द्रीयता, और उत्तरदायित्व के रूप में परमेश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण निष्ठा का वर्णन कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. किस प्रकार प्रायश्चित के अनुग्रह और सामान्य अनुग्रह के परमेश्वर के कार्य हमारे अपने स्वभाव के लिए उदाहरण के रूप में कार्य करते हैं?

8. किस प्रकार कृतज्ञता और भय जैसे अनुराग प्रेम की बाइबलीय धारणा से संबंधित हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. प्रेरणाएं परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं? क्या इससे आपको परेशानी होती है कि वह बाहरी अनुकूलता को नहीं चाहता?

2. इस अध्याय में बताई गईं प्रवृतियों के अतिरिक्त ऐसी कौनसी आंतरिक प्रवृतियाँ हैं जिनकी ओर बाइबल अच्छे कार्यों की वैध प्रेरणाओं के रूप में संकेत करती है?

3. अपने ह्रदय में देखें, कार्य करने में आपको क्या प्रेरित करता है? आपकी बाहरी आज्ञाकारिता क्या ऐसे ह्रदय से आती है जो परमेश्वर और उसके वचन के प्रति सच्चाई से समर्पित है?

4. कपटपूर्ण कार्य से हम स्वयं को कैसे बचा सकते हैं? हमारे कार्य और हमारी प्रेरणाएं हमारे परमेश्वर के वचन के अनुरूप हों, इसके लिए हमें क्या कदम उठाने चाहिए?

5. क्या आपको याद जब आपने उद्धाररुपी विश्वास पाया था? इस अनुभव ने आपकी प्रेरणाओं और व्यवहार को कैसे प्रभावित किया? विश्वास के आपके निरंतर जीवन ने आपकी प्रेरणाओं और व्यवहार को कैसे परिवर्तित किया है?

6. क्या आपके जीवन में पश्चाताप का चरित्र है? किन क्षेत्रों और रूपों में आप सक्रिय रूप से विद्रोही हैं?

7. निरंतर पश्चाताप की ओर विश्वासी कैसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं? हम परीक्षाओं पर कैसे सफलतापूर्वक विजय प्राप्त कर सकते हैं?

8. क्या आपने कभी परमेश्वर द्वारा छोड़ा हुआ महसूस किया है या कि हमारा विश्वास सच्चा है या नहीं? क्या आप कभी पूर्ण आश्वस्त हुए हैं कि आपका विश्वास सच्चा है? जब हम बाइबल पर आधारित निर्णय लेने का प्रयास करते हैं तो ये दोनों स्वभाव विश्वासियों के जीवन में क्या बदलाव लाते हैं?

9. किन रूपों में आप और आपकी कलीसिया मसीही विश्वास से बाहर के लोगों, और यहाँ तक कि आपके शत्रुओं के प्रति परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह को प्रकट कर सकते हैं?

10. क्या प्रेम के बारे में आपकी पहले की समझ इस अध्याय में प्रस्तुत प्रेम के विवरण से भिन्न है? कैसे? आपके भावी निर्णयों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

11. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org